शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ४० : नई दिल्ली : ८-१४ जनवरी २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद विचरण करते हुए लावा सरदारगढ़ के निकट पधार गए हैं। दिनांक ११ जनवरी को वर्धमान महोत्सव हेतु लावा सरदारगढ़ और १५ जनवरी को मर्यादा महोत्सव हेतु आमेट में मंगल प्रवेश होगा। विज्ञप्ति के सभी पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

नवसंवत्सर बने शुभकंर हर दिन हर क्षण मंगलमय हो।
सुख की लय हो घर परिकर में व्यक्ति-व्यक्ति का भाग्योदय हो।
अमृत महोत्सव है प्रभुवर का चिहुंदिशि गूंजे जय हो, जय हो।
सबके हृदयवलय का स्वर है गण-गणपति की सदा विजय हो॥

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

(गुरुदेव तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' की संपादक साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की कलम से)

अन्तिम दिन : अन्तिम घंटा (८८५)

"लगभग दस बजकर पन्द्रह मिनट का समय। गुरुदेव ने बोथरा भवन से प्रस्थान किया। सन्तों ने साधन में विराजने के लिए निवेदन किया, किन्तु गुरुदेव की मानसिकता पैदल चलने की थी। मन की प्रसत्ति और गति की स्फूर्ति देखकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो गुरुदेव अच्छा स्वास्थ्य-लाभ कर 'बोथरा भवन' से पधार रहे हैं। जिस दिन चिकित्सा के उद्देश्य से 'तेरापंथ भवन' से वहां पधारे थे, उस दिन चेहरा क्लान्त था। चित्त में भी चैन नहीं था। उस दिन और इस दिन की तुलना की जाए तो बहुत बड़ा अन्तर परिलक्षित हो रहा था। गुरुदेव थोड़ी दूर पैदल चले। मन में उत्साह था, पर श्वास भारी होने लगा। सन्तों ने पुनः साधन में विराजने के लिए निवेदन किया। श्वास की स्थिति को देखते हुए गुरुदेव ने निवेदन स्वीकार किया और साधन में विराज गए। साधन चला। काफी लोग साथ थे। अनायास ही एक अच्छा जुलूस-सा हो गया।

तेरापंथ भवन में प्रवेश

उधर 'तेरापंथ भवन' में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने प्रातःकालीन प्रवचन सम्पन्न कर सन्तों को निर्देश दिया 'सब अगवीन के लिए जाओ। गुरुदेव पधारने वाले हैं।' आचार्यश्री का निर्देश पाकर सन्त चले और महावीर वाटिका (लगभग एक फर्लांग) तक पहुंच गए। गुरुदेव ने मधुर स्मित के साथ कहा 'तुम लोगों ने यहां आने को विहार बना दिया।'

कुछ समय बाद गुरुदेव साधन छोड़ पैदल चलने लगे। 'तेरापंथ भवन' के बाहरी भाग तक गुरुदेव पहुंचे, तब तक आचार्यश्री महाप्रज्ञजी गुरुदेव की अगवानी के लिए भवन से बाहर आ गए। गुरुदेव पुलकित थे, आचार्यश्री भी पुलकित थे। दस बजकर पचीस मिनट का समय था। आचार्यश्री वन्दना करने के लिए बैठने लगे, किन्तु गुरुदेव ने उनके दोनों हाथ पकड़ लिए। आचार्यश्री की मुद्रा बैठने की थी, पर वे बैठ नहीं पाए। गुरुदेव ने आचार्यश्री के हाथ का सहारा लिया और महाश्रमण मुनि मुदितकुमारजी (आचार्यश्री महाश्रमण) ने आचार्यश्री को अपने हाथ का आलम्बन दिया। इस प्रकार तेरापंथ के तीन आचार्यों (अतीत, आगत और अनागत) ने समताल से एक साथ 'तेरापंथ भवन' में प्रवेश किया। जयकारों से धरती और आकाश दोनों गूंज उठे।

जनता की उत्सुकता

दस बजकर तीस मिनट पर गुरुदेव का 'तेरापंथ भवन' में प्रवेश हुआ। गुरुदेव हॉल में पधारे और वहां बिछे हुए पट्ट पर विराजमान हो गए। उस समय मैं भी साध्वियों के साथ वहां पहुंच चुकी थी। प्रवचन की सम्पन्नता के बाद काफी

लोग भवन में रुके हुए गुरु-दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने उल्लास के साथ 'वन्दे गुरुवरम्' कहकर वन्दना की। गुरुदेव का हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में ऊपर उठा। लोग निहाल हो गए। गुरुदेव ने आचार्यश्री को लक्ष्य करके कहा 'अभी तक हजारों लोग उपस्थित हैं। आचार्यश्री बोले 'जनता में दर्शन के लिए बड़ी उत्सुकता है।'

पांच मिनट बाद गुरुदेव वहां से उठे और कक्ष की ओर आने लगे। आचार्यश्री साथ चलने के लिए उद्यत हुए तो गुरुदेव ने कहा 'तुम अपने कक्ष में चले जाओ। मैं थोड़ा विश्राम कर लेता हूं।' आचार्यश्री अपने कक्ष में पधार गए। दस बजकर छत्तीस मिनट पर गुरुदेव अपने कक्ष की ओर पधारे। कक्ष के बाहर बिछे हुए पट्ट पर विराजने लगे तो मुनिश्री मधुकरजी ने निवेदन किया 'विश्राम के लिए भीतरी कक्ष में बिछौना बिछाया हुआ है।' गुरुदेव भीतर पधार कर लेट गए। पसीना पौंछने का वस्त्र गीला हो गया था। मुनिश्री हीरालालजी ने पानी से उसका प्रक्षालन किया, उसे सुखाया और व्यवस्थित समेट कर गुरुदेव के हाथ में थमा दिया। गुरुदेव ने पूछा 'क्या इसे पाउडर से धोया है।' मुनिश्री हीरालालजी ने कहा 'नहीं गुरुदेव! केवल पानी से धोया है।' गुरुदेव ने प्रशंसा सूचक दृष्टि से निहारते हुए कहा 'ऐसा स्वच्छ लग रहा है, जैसे पाउडर से धोया है।'

गर्मी क्यों लग रही है?

गुरुदेव विश्राम कर रहे थे। महाश्रमण मुनि मुदितकुमारजी, मैं और कुछ साधु-साध्वियां गुरुदेव की उपासना में उपस्थित थीं। गुरुदेव ने महाश्रमणजी से कहा 'चलना कठिन हो गया।' इस कथन से पता चलता है कि गुरुदेव पैदल पधारे, उसमें काफी श्रम लगा। हो सकता है, श्रम के कारण हृदय पर दबाव पड़ा हो। कमरे में गर्मी अधिक लगी। कुछ बेचैनी-सी महसूस हुई। गुरुदेव ने सन्तों से कहा 'खिड़कियां खोलो।' सन्तों ने निवेदन किया खिड़कियां खुली हुई हैं। कुछ समय लेटकर विश्राम किया। गर्मी का अत्यधिक अनुभव होता रहा। उस अनुभूति को स्वर मिला बाहर इतनी हवा चल रही है, फिर भी इतनी गर्मी क्यों लग रही है?

समय से पहले इनहेलर का प्रयोग

दस बजकर पैंतालीस मिनट पर गुरुदेव ने मुनि दिनेशकुमारजी को याद किया। वे तत्काल गुरुदेव के उपपात में पहुंच गए। गुरुदेव ने उनसे इनहेलर मंगाकर उसका प्रयोग किया। सामान्यतः इनहेलर का उपयोग करने का समय ग्यारह बजे का था। उस दिन जल्दी अपेक्षा क्यों हुई? यह एक प्रश्न था। उसका उत्तर भी सोचा गया गुरुदेव पैदल पधारे, इसलिए थकान हो गई। गर्मी ज्यादा लग रही है, पसीना ज्यादा आ रहा है। श्वास कुछ भारी है, इस कारण इनहेलर की अपेक्षा जल्दी हो गई होगी। सबका ध्यान श्रम और गर्मी पर अटका हुआ था। इससे आगे की कल्पना को लेकर कोई संभावना भी नहीं थी।

महिलाओं पर अनुग्रह की वर्षा

इनहेलर का प्रयोग कर गुरुदेव पुनः विश्राम करने के लिए लेट गए। सज्जनदेवी चौपड़ा, मीरादेवी बैद और कान्ता देवी बाफणा, ये तीन बहनें कुछ निवेदन के लिए आईं, किन्तु गुरुदेव को विश्राम की मुद्रा में देख वापस जाने लगीं। गुरुदेव ने प्रश्न किया 'ये बहनें वापस क्यों जा रही हैं?' मैंने निवेदन किया 'महिला मंडल के आगामी कार्यक्रमों के सम्बन्ध में बात करने के लिए सज्जनबाई आदि बहनें आई थीं, किन्तु गुरुदेव के विश्राम में व्यवधान न हो, इसलिए लौट गईं।' गुरुदेव ने फरमाया 'बहनें वापस क्यों गईं? उन्हें दर्शन करवा दो।' दो साध्वियों द्वारा सूचना पाकर बहनें वापस आ गईं।

बहनों ने गुरुदेव के दर्शन किए। गुरुदेव बोले 'नींद नहीं थी। तुम वापस क्यों गई? बोलो, क्या बात है?' सज्जनबाई ने निवेदन किया 'दिल्ली से कान्ता (अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री) आई है। हम अगस्त में महिलामंडल का त्रिदिवसीय कार्यक्रम रखना चाहती हैं

३ अगस्त प्रबुद्ध महिला सम्मेलन

४ अगस्त बीकानेर चोखले की महिलाओं का सम्मेलन

५ अगस्त विकलांगों का बड़ा कार्यक्रम

आश्विन मास में अखिल भारतीय महिला मंडल का वार्षिक अधिवेशन करना है। इस वर्ष अध्यक्ष का चुनाव भी होगा।'

गुरुदेव ने प्रसन्नता से बहनों की सारी बात सुनी। उसके बाद मुझे लक्ष्य करके फरमाया 'अच्छा है, ऐसे कार्यक्रम चलने चाहिए।' चुनाव के सन्दर्भ में गुरुदेव ने कहा 'इन दिनों संघीय सभा-संस्थाओं के बारे में एक निश्चित नीति अपनाने

की बात चल रही थी। उसके अनुसार उपाध्यक्ष अध्यक्ष और उपमंत्री मंत्री बने तो कार्य सम्यक प्रकार से हो सकता है। नए अध्यक्ष और मंत्री आने से कार्य में कठिनाई होती है।' गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त कर बहनें निश्चिन्त होकर लौट गईं।

चिकित्सा और पथ्य के बारे में अवगति

कुछ समय विश्राम करने के बाद गुरुदेव पट्ट पर आसीन हो गए। हम कुछ साध्वियां और कुछ बाल साधु गुरुदेव की उपासना कर रहे थे। गुरुदेव ने अपने स्वास्थ्य के लिए निर्धारित व्यवस्था की जानकारी देते हुए कहा 'आज वैद्य महावीर प्रसादजी आए। डॉ. मरोठी भी आए। जांच के बाद उन्होंने बताया कि सब कुछ सामान्य है, बिल्कुल ठीक है। आज उत्सर्ग भी स्वतः बिना एनिमा के हुआ। पेट हल्का है और 'जी सोरा' है। कोई बेचैनी नहीं है। आगे के लिए वैद्यजी द्वारा निर्दिष्ट क्रम इस प्रकार है

- आज से हर रोज एनिमा नहीं लेनी है।
- पहले दो दिन मिट्टी की पट्टी, फिर एनिमा।
- फिर दो दिन मिट्टी की पट्टी और फिर एनिमा।'

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए गुरुदेव ने कहा 'खान-पान के बारे में वैद्यजी का परामर्श यह रहा कि पिछले तेरह दिनों से दूध और छेना बन्द है। अब रुचि हो तो दस बजे के बाद थोड़ा-सा छेना लिया जा सकता है। दूध अभी बन्द रहेगा। छाछ या कोई चीज ठंडी हो तो उसे धूप में नहीं, पानी में गर्म करके लेनी चाहिए।' उस दिन गुरुदेव ने लगभग सात बजे मधुयुक्त नींबू का रस लिया था। लगभग सवा आठ बजे छह-सात तोला उकाली ली। दस बजे फिर पानी के साथ मधु और नींबू का रस लिया। चूंकि अब वैद्यजी के अनुसार पथ्य के रूप में और कुछ लिया जा सकता था, अतः मैंने निवेदन किया 'अभी कुछ लेने की रुचि है क्या?' गुरुदेव ने अन्यमनस्कता-सी दिखाई तो वह प्रसंग वहीं समाप्त हो गया।

प्राकृतिक चिकित्सा के दौरान गुरुदेव भोजन के बाद छाछ का सेवन करते थे। साध्वी चित्रलेखाजी छाछ लेकर आई और बोली 'छाछ ठंडी है।' गुरुदेव ने यह बात सुनकर कहा 'ठंडी है तो इसे क्यों रखा जाए? कल्पलता छाछ लाती ही है।' मैंने निवेदन किया 'आज इनसे ही मंगाई है।' गुरुदेव ने पुनः फरमाया 'वह लाया तो करती है।' मैंने अनुरोध किया 'दूसरी मंगा लेते हैं।' गुरुदेव ने कहा 'नहीं, दूसरी मंगाने की अपेक्षा नहीं है। इसे गर्म पानी में रख दो।' मैंने साध्वी चित्रलेखाजी से गर्म पानी लाने के लिए कहा। वे पानी लेने चली गईं।

हर कार्य में सुघड़ता पसन्द

गुरुदेव पट्ट पर विराजमान थे। उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि पट्ट ठीक से बिछा हुआ नहीं है। गुरुदेव की प्रकृति ही कुछ ऐसी थी कि उन्हें किसी प्रकार की अव्यवस्था पसन्द नहीं थी। उपकरणों का प्रतिलेखन करना हो, उपकरणों का समेटना हो या उन्हें कहीं पर रखना हो, सब काम व्यवस्थित होते तो अच्छे लगते, अन्यथा गुरुदेव स्वयं सजग कर देते। इसी प्रकार कक्ष में हर वस्तु यथा स्थान रखी हुई रहती तो ठीक, नहीं तो गुरुदेव प्रेरणा देकर यथास्थान रखवा देते। उस दिन भी पट्ट को अच्छी तरह बिछाने की दृष्टि से उससे नीचे उतरे और बाल मुनियों को निर्देश दिया कि इसे ठीक बिछाओ। बाल मुनियों ने पट्ट को गुरुदेव के इंगित के अनुसार ठीक कर दिया। गुरुदेव पुनः पट्ट पर विराज गए।

स्थान पर जाने का निर्देश

गुरुदेव ने घड़ी की ओर देखा। ग्यारह बज चुके थे। मेरी ओर लक्ष्य करके गुरुदेव ने फरमाया 'तुम अपने स्थान पर चली जाओ।' मैंने निवेदन किया 'अभी जाने का समय नहीं हुआ है।' दो-चार मिनट बाद पुनः गुरुदेव ने कहा 'अभी लेखन का काम तो होगा नहीं। क्यों धूप चढ़ाती हो? पांव जलेंगे। अब स्थान पर चली जाओ।' मैंने निवेदन किया 'साध्वी चित्रलेखाजी गर्म पानी लेने गई हैं। वे आ जाएं तो यहां का काम निपटा कर चली जाऊं।' गुरुदेव बोले 'यह काम तो वह भी कर सकती है। इसके लिए तुम विलम्ब क्यों करती हो?' गुरुदेव का इंगित समझ कर साध्वियों ने वहां से प्रस्थान कर दिया।

मुनि जम्बूकुमारजी आदि कुछ सन्त कक्ष में बैठे थे। गुरुदेव ने मुनि जम्बूकुमारजी को अध्ययन की प्रेरणा दी। मुनि आलोककुमारजी को कालुकौमुदी के कुछ सूत्र पढ़ाए। उस समय महाश्रमण मुनि मुदितकुमारजी आचार्यश्री के कक्ष से बाहर ही बैठे थे। साध्वी जिनप्रभाजी गुरुदेव की अनुज्ञा लेकर महाश्रमणजी से बात करने के लिए गईं। उन्हें साधु-साध्वियों के पाठयक्रम के सम्बन्ध में महाश्रमणजी से चर्चा करनी थी। उनकी चर्चा शुरू हुई और पदमचन्दजी पटावरी ने महाश्रमणजी

के दर्शन किए। महाश्रमणजी ने उनको सूचित किया कि गुरुदेव उनसे बात करना चाहते हैं। पटावरीजी ने कहा 'अभी तो गुरुदेव पधारे ही हैं, मैं मध्याह्न में सेवा कर लूंगा।'

पटावरीजी से बात नहीं हो पाई

महाश्रमणजी ने संभवतः उसी समय बात करना उपयुक्त समझा होगा, इसलिए मुनि कुमारश्रमणजी को निर्देश दिया कि वे गुरुदेव से निवेदन करें कि पटावरीजी आए हुए हैं। मुनि कुमारश्रमणजी ने गुरुदेव को निवेदन किया। गुरुदेव ने उनको दर्शन कराने की स्वीकृति दे दी। मुनि कुमारश्रमणजी से सूचना पाकर पटावरीजी अपने पिता रेवंतमलजी के साथ वहां पहुंचे। गुरुदेव ने रेवंतमलजी से थोड़ी-सी बात की, फिर पटावरीजी के अभिमुख होते हुए आलोक मुनि से चश्मा लाने के लिए कहा। आलोक मुनि तत्काल चश्मा लेकर आए। उन्होंने चश्मा गुरुदेव के हाथ में थमाया, किन्तु वह नीचे गिर पड़ा।

अप्रत्याशित घटना

गुरुदेव ने चश्मा लाने का निर्देश दिया, उस समय ग्यारह बजकर दस-ग्यारह मिनट हुए होंगे। शायद गुरुदेव कुछ पढ़ना चाहते थे, इसलिए चश्मे की अपेक्षा हुई। पर चश्मा लगाने का मौका ही नहीं मिला। वह हाथ से गिरा, उसके साथ ही गुरुदेव की गर्दन नीचे झुक गई। पटावरीजी देखते ही रह गए। आलोक मुनि ने हाथ के सहारे गर्दन को पकड़े रखा। मुनि हिमांशुकुमारजी मुनि मधुकरजी को बुलाकर लाए। मुनि मधुकरजी ने वहां आते ही हृदय पर मालिश शुरू कर दी। उन्होंने मुनि हिमांशुकुमारजी से कहा कि वे अविलम्ब आचार्यश्री को बुलाकर लाएं। महाश्रमणजी बाहर ही बैठे थे, वे भीतर आ गए। मुनि मधुकरजी ने गुरुदेव से पूछा 'आपके कहीं दर्द है क्या?' गुरुदेव ने बोलने का प्रयत्न किया, पर बोल नहीं पाए।

मुनि हिमांशुकुमारजी ने आचार्यश्री के निकट पहुंचकर कहा 'आप जल्दी पधारें। गुरुदेव के क्या हो गया?' आचार्यश्री तत्काल वहां पहुंचे। गुरुदेव पट्ट पर निश्चेष्ट विराजमान थे। मुनि मधुकरजी ने बाढ़ स्वर में कहा 'आचार्यश्री पधार गए हैं।' पर शरीर में किसी प्रकार की हरकत नहीं हुई। शायद बाहर की चेतना विलीन हो चुकी थी। गुरुदेव की आंखें खुल गईं और उनमें लालिमा छा गई। यह समय ग्यारह बजकर तेरह मिनट का रहा होगा।

निरुपाय अवस्था का आलम्बन

महाश्रमणजी बाहर से भीतर गए, उस समय साध्वी जिनप्रभाजी भी भीतर पहुंचीं। उन्होंने जो दृश्य देखा, वे स्तब्ध रह गईं। उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि मैं वहां नहीं हूं। मैं गुरुदेव के निर्देश से 'तेरापंथ भवन' से रवाना हो चुकी थी, पर शान्तिनिकेतन नहीं पहुंची थी। साध्वी जिनप्रभाजी को मेरे वहां नहीं होने की जानकारी मिलते ही वे तत्काल चलीं और मूलचन्दजी बोथरा के घर के पिछवाड़े में मुझसे मिलीं। उनकी आकृति देखकर लगा कि कुछ अनहोना घटित हो गया है। वे बड़ी मुश्किल से बोलीं 'जल्दी चलो, देखो, गुरुदेव को क्या हो गया?' इस अप्रत्याशित सूचना ने मुझे जड़-सा बना दिया। चलना कठिन हो गया, फिर भी मैं चली। कुछ साध्वियां पहले से मेरे साथ थीं, कुछ साध्वियां और आ गईं। हम वहां पहुंचीं, तब तक काफी सन्त और कुछ साध्वियां उपस्थित हो गई थीं। गुरुदेव को पट्ट पर लिटा दिया गया था। आचार्यश्री पट्ट के निकट ही कुर्सी पर आसीन थे। नमस्कार महामंत्र आदि मंत्रों का जप चल रहा था। कुछ समझ में आया, कुछ नहीं आया। हम भी वहां जाकर बैठ गईं और जपयोग में सम्मिलित हो गईं।

दिल दहलानेवाली सूचना

मेरे मन में ढेर सारे प्रश्न कुलबुला रहे थे, पर किसी को कुछ पूछने का अवकाश ही नहीं था। विचित्र प्रकार का माहौल था। कुछ डॉक्टर भी वहां थे। उन्होंने चिकित्सा शुरू की। हृदय पर मालिश की ऑक्सीजन आदि देने का प्रयत्न किया, पर कोई भी प्रयत्न सार्थक प्रतीत नहीं हो रहा था। राजस्थान के प्रसिद्ध हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. श्यामनाथ मिश्रा को याद किया गया। वे आए। उन्होंने पूरी जांच की। जांच के बाद वे कक्ष से बाहर चले गए। आचार्यश्री ने उनको पुनः याद किया और पूछा 'डॉक्टर साहब! कहिए, क्या स्थिति है?' डॉ. मिश्रा ने व्यथित और उदास मुद्रा में कहा 'अब गुरुदेव हमारे बीच नहीं रहे।' डॉ. मिश्रा का यह वाक्य वज्रपात से भी अधिक दुःसह था, पर उसे सहन करने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं था।

२० अक्टूबर १९१४ तदनुसार वि.सं. १९७१, कार्तिक शुक्ला द्वितीया जो महापुरुष इस धरती पर आए, वे २३ जून १९९७ तदनुसार वि.सं. २०५४, आषाढ़ कृष्णा तृतीया को मध्याह्न में अचानक अन्तर्धान हो गए। बयासी वर्ष और

लगभग साढ़े सात महीनों से चलनेवाला सांसों का सफर रुक गया। उसके साथ ही **मेरा जीवन : मेरा दर्शन** वाङ्मय अथवा आचार्यश्री तुलसी का जिन्दगीनामा पूर्णता के शिखर को छूकर ठहर जाता है। इसे अदृष्ट की आंखमिचौनी का खेल भी कहा जा सकता है। इस ठहराव के बाद मस्तिष्क में उद्भूत विचारों की उर्मियों को शब्द के फ्रेम में फिट करने का एक छोटा-सा प्रयास यहां प्रस्तुत है

- एक तूफान आया
  ऐसा भयंकर तूफान आया
  जो बोधि के महान वटवृक्ष को
  इतने आहिस्ते से उखाड़कर ले गया
  कि किसी को अहसास तक नहीं होने दिया।

- एक देदीप्यमान सूरज
  मन-मन्दिर के हर कोने को उजालनेवाला सूरज
  जिसके सामने खुली आंखों से देखना भी मुश्किल था
  अचानक बादलों की ओट हो गया
  मानो सृष्टि का प्राणतत्त्व ही खो गया।

- एक चिन्मयी ऊर्जा
  जन-जन को जीवन बांटनेवाली ऊर्जा
  जो बह रही थी लाखों-लाखों प्राणों में
  अचानक यों थम गई
  जैसे पहाड़ से उतरती बरसाती नदी जम गई।

- एक उजली छवि
  जन-जन की आंखों में बसी अलौकिक छवि
  जिसे देखकर मन कभी भरता नहीं था
  अचानक यों तिरोहित हो गई
  जैसे एक विराट चेतना शून्य में खो गई।

- एक उपलब्धिभरा युग
  जो चल रहा था पूरी रफ्तार के साथ
  जिसका हर दिन था सोना और चांदी थी उजली रात
  उसका इतना अप्रत्याशित अवसान
  कभी सोचा नहीं था।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आमेट की ओर

पीपली में पावन पदार्पण

२७ दिसम्बर। परमाराध्य आचार्यवर प्रातः बग्गड़ से ३.४ कि.मी. का विहार कर मेवाड़ की सीमा पर स्थित पीपली पधारे। महातपस्वी आचार्यवर के पावन पदार्पण से पीपली का कण-कण पुलकित था। सर्वत्र खुशहाली छाई हुई थी। आचार्यवर का प्रवास श्री भंवरलाल, शान्तिलाल पितलिया परिवार के निवास पर हुआ। पूज्यवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर पितलिया परिवार का प्रत्येक सदस्य हर्षाभिभूत था। पूज्यप्रवर प्रातःकालीन कार्यक्रम हेतु करीब एक कि.मी. दूर स्थित मांगीलाल बोहरा उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। यहां पूज्यवर से मंगलपाठ श्रवण कर नवनिर्मित महाश्रमण दीर्घा का श्री जुगराज नाहर परिवार की ओर से लोकार्पण किया गया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा पूज्यवर के स्वागत में गीत का संगान किया गया। श्री शांतिलाल पितलिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। श्री मोतीलाल बोहरा ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। समणी मीमांसाप्रज्ञाजी ने अपने संसारपक्षीय पैतृक गांव में अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। मुमुक्षु बहनों ने अपने

आस्थासिक्त भावों को गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--कई महीनों से आचार्यवर आचार्य भिक्षु की कर्मस्थली मेवाड़ में अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। पूज्यवर का आज पीपली में पदार्पण हुआ है। यह मेवाड़ और मारवाड़ का संगम स्थल है। पूज्यवर जहां पधारते हैं, वहां चारों ओर मानों सुख के प्रकम्पन प्रकम्पित होते हैं। आचार्यवर की प्रेरणा को आत्मसात् कर इस सुख को चिरस्थायी बनाया जा सकता है।

परम पावन आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा-'आस्तिक दर्शनों में आत्मा का अस्तित्व स्वीकार किया गया है। वह पुद्गलों से भिन्न चेतना लक्षण वाली होती है। आत्मा और शरीर दोनों भिन्न-भिन्न तत्त्व हैं। आत्मा स्थायी और शरीर अस्थायी है। जो व्यक्ति आत्मा को गौण कर शरीर में ही रचा पचा रहता है, वह इस अध्रुव शरीर को तो खोता ही है, अमर आत्मा के कल्याण का भी अवसर गवां देता है। प्राणी कर्म करने में एक सीमा तक स्वतंत्र और उसका फल भोगने में परतंत्र होता है। पूर्वकृत कर्मों के कारण आत्मा दुःखों को प्राप्त होती है। इसलिए व्यक्ति को पापार्जन से बचने और मोहकर्म को प्रतनु करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि मोहकर्म कृश हो गया तो मानना चाहिए कि मुक्ति स्वागत के लिए तैयार है।' पूज्यवर ने अपने प्रवचन के दौरान 'घाटे के कासीद' नाम से अपनी पहचान बनाने वाले स्व. मांगीलालजी बोहरा और स्व. हस्तीमलजी दक की सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनके परिजनों को उनकी विशेषताओं को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की। पीपली की समणी मीमांसाप्रज्ञाजी को साधना के विकास और पवित्र कार्य करने का आशीर्वाद प्रदान किया।

सिरियारी से मात्र पच्चीस कि.मी. दूरी पर स्थित पीपली में २५ तेरापंथी परिवार और ३ अन्य जैन परिवार हैं। सायंकालीन आहार के उपरान्त आचार्यवर उनके घरों में पधारे और रात्रि में उन्हें पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। लोगों ने विविध संकल्प ग्रहण किए। श्री घीसूलाल बोहरा ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

अहिंसा यात्रा बाघाना में

२८ दिसम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यवर प्रातः पीपली से बाघाना की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती कामलीघाट स्टेशन पर स्थित तेरापंथी मांडोत परिवार के श्रद्धालुओं की प्रार्थना पर आचार्यवर उनके घरों की ओर पधारे, किन्तु हरियाली के कारण पूज्यवर का पदार्पण घरों में नहीं हो सका। आचार्यवर ने रेलवे पटरी के निकट कुछ क्षण रूककर परिवार को प्रेरणा प्रदान की।

विहार के मध्य पूज्यवर का श्री मेवाड़ जैन ट्रस्ट द्वारा निर्मीयमाण बहुउद्देशीय भवन में पदार्पण हुआ। यहां आयोजित कार्यक्रम में ट्रस्ट से जुड़े कार्यकर्ताओं ने पूज्यचरण का श्रद्धासिक्त स्वागत करते हुए ट्रस्ट की भावी योजनाओं की अवगति दी। परम पूज्यवर ने अपने उद्बोधन में कहा--श्री मेवाड़ जैन ट्रस्ट का यह बहुउद्देशीय भवन निर्मीयमाण है। अभी ट्रस्ट के विषय में अवगति दी गई। यहां सामाजिक गतिविधियों के संचालन की योजना है, उसके साथ आध्यात्मिक गतिविधियां भी चलती रहें। सभी कार्यकर्ताओं में परस्पर सौमनस्य बना रहे। यहां से प्रस्थान कर आचार्यवर ने कामलीघाट चौराहा स्थित श्रद्धालुओं के घरों को अपनी पावन पदरज से पावन किया।

पूज्यवर राष्ट्रीय राजमार्ग नं. ८ पर यात्रा करते हुए कुल १२.५ का विहार कर बाघाना पधारे। आचार्यवर के स्वागत में स्थानीय जनता ने पलक पांवड़े बिछा दिए। अहिंसा यात्रा के साथ पूज्यवर का स्वागत कर तेरापंथ समाज सहित संपूर्ण जैन एवं जैनेतर समाज हर्षविभोर था। आचार्यवर का एकदिवसीय प्रवास पाकर श्री हस्तीमल मेहता परिवार कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था। प्रवास स्थल के निकटस्थ महावीर भवन में भी आचार्यवर का अनेक बार पदार्पण और विराजना हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के उपरान्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरणास्पद अभिभाषण हुआ।

परमश्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संसार में चौरासी लाख जीव योनियां मानी गई हैं। उनमें मनुष्य जन्म को दुर्लभ कहा गया। विभिन्न योनियों में परिभ्रमण करते हुए प्राणी मनुष्यत्व को प्राप्त होता है। मनुष्य जन्म मिलने के बाद भी धर्मश्रवण दुर्लभ होता है। जिन्हें धर्मश्रवण का अवसर प्राप्त है, वे उसका सदुपयोग करें। साधुओं का प्रवचन सुनने से कल्याण का पथ प्राप्त हो सकता है और पापकारी प्रवृत्तियों का ज्ञान भी हो सकता है। सुनने के पश्चात् जो श्रेयस्कर हो, उसे ग्रहण करना चाहिए। जो व्यक्ति ऐसा करता है, उसका जीवन धन्य बन जाता है।' कार्यक्रम के अन्त में श्री गणपतलाल जैन ने आभार व्यक्त किया। आज श्रीडूंगरगढ़ निवासी श्री तोलाराम बोथरा के स्वर्गवास के पश्चात् उनका परिवार संबल प्राप्ति हेतु श्री चरणों में उपस्थित हुआ। पूज्यवर ने तोलारामजी और उनके पुत्र श्री दीपचन्दजी की श्रद्धाभावना का उल्लेख करते हुए परिवारजनों को धार्मिक जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की।

बाघाना में १६ तेरापंथी परिवार और एक अन्य जैन परिवार है। सायंकालीन आहार के पश्चात् आचार्यवर ने उनके घरों का स्पर्श किया। रात्रि में श्रद्धालुओं ने पूज्यवर की उपासना का सुअवसर प्राप्त कर विविध संकल्प स्वीकार किए।

छापली में छाया उल्लास

२६ दिसम्बर। परमपूज्य आचार्यवर प्रातः बाघाना से चार कि.मी. का विहार कर छापली पधारे। शान्तिदूत आचार्यवर के चरणों का स्पर्श पाकर छापली धरा धन्य बन गई। सर्वत्र उल्लास छाया हुआ था। श्रद्धालुओं की प्रसन्न मुखाकृति उनके हृदयों में उठ रहे आस्था के ज्वार को अभिव्यक्ति दे रही थी। आचार्यवर स्वागत जुलुस के मध्य स्थानीय तेरापंथ भवन में पधारे, दोनों तल का अवलोकन किया और कुछ क्षण विराजमान होकर 'प्रभो! यह तेरापंथ महान...' गीत का संगान किया। पूज्यवर का प्रवास श्री मांगीलाल श्रीमाल परिवार के निवास पर रहा। श्रीमाल परिवार के लिए आचार्यवर का यह अनुग्रह किसी वरदान से कम नहीं था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल और कन्या मंडल ने गीत का संगान किया। श्री लादूलाल श्रीमाल, स्थानीय सभा के मंत्री श्री बाबूलाल श्रीमाल, श्री सोहन कोठारी, श्री अर्जुन सिंघवी और श्री धनराज भटेवरा ने अपने भावों को अभिव्यक्त किया। समणी विपुलप्रज्ञाजी ने गीत के द्वारा आचार्यवर की स्तुति की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'व्यक्ति में विवेक जागृत होना अपेक्षित होता है। विवेक के अभाव में करणीय और अकरणीय में भेद करना कठिन हो जाता है। यदि विवेक की जागरणा हो जाती है तो वह मानव जीवन की बड़ी उपलब्धि होती है। खाद्य संयम अच्छा है, किन्तु मैं खाद्य विवेक को उससे अधिक महत्त्व देता हूं। केवल न खाने का संकल्प रहेगा तो शरीर चलना मुश्किल हो जाएगा। साथ में अपेक्षित खाद्य पर भी ध्यान देना होता है। इसी प्रकार वाणी का भी विवेक रहना चाहिए। बोलना भी बड़ी बात नहीं, न बोलना भी बड़ी बात नहीं, बोलने और न बोलने का विवेक विशेष बात होती है। इस तरह जीवन की प्रत्येक क्रिया में विवेक जागृत हो जाए।' पूज्यवर ने अपने प्रवचन के दौरान छापली से चौपन की तपस्या में आठ किमी. विहार करने वाली दीर्घतपस्विनी साध्वी अणचांजी के पराक्रम का उल्लेख किया और इस प्रसंग में पूज्यवर ने अ.भी.रा.शि. को नमः मंत्र में उल्लिखित पांच तपस्वी संतों का भी स्मरण किया।

छापली में तेरापंथ समाज के ३५ घर हैं, सायंकालीन आहार के पश्चात् वे पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने। रात्रि में श्रद्धालुओं ने आचार्यवर की उपासना के दौरान विविध संकल्पों को स्वीकार किया। आज दिवेर के थानेदार श्री सुमेरसिंहजी ने पूज्यसन्निधि में उपस्थित होकर पथदर्शन प्राप्त किया।

देवगढ़ में भव्य स्वागत

३० दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यवर प्रातः छापली से देवगढ़ की ओर प्रस्थित हुए। सर्दी को तीव्रता प्रदान करने वाली प्रतिकूल दिशा में बहती हुई ठंडी हवा भी महातपस्वी आचार्यवर के चरणों को रोकने में असमर्थ थी। राष्ट्रीय राजमार्ग पर द्रुतगति से दौड़ने वाले वाहन उस हवा का तेज झोंका अपने साथ ला रहे थे, किन्तु आचार्यवर समभावपूर्वक गन्तव्य की ओर गतिमान थे। पूज्यवर पुनः बाघाना होते हुए द्विदिवसीय प्रवास हेतु देवगढ़ पधारे। पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय जनता का सैलाब उमड़ पड़ा। जैन और अजैन का भेद करना दुरूह था। हर ओर अलौकिक वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था। पूज्यप्रवर का मार्गवर्ती विद्या निकेतन और तेरापंथ भवन में भी पदार्पण हुआ। भव्य स्वागत जुलूस प्रताप चौराहा, मारु दरवाजा, माणक चौक, सूरज दरवाजा, खादी भंडार, हॉस्पीटल रोड होते हुए राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पहुंचकर सभा के रूप परिणत हो गया। आचार्यवर का द्विदिवसीय प्रवास इसी विद्यालय में हुआ। आज का कुल विहार १५.६ किमी. का रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री हीरालाल आच्छा, मंत्री श्री विमल बोहरा और श्री उत्तमचन्द सुकलेचा ने अपने आराध्य के स्वागत में अभिव्यक्ति दी। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस महिला कमेटी की सचिव श्रीमती शीला पोखरना ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी कंचनकुमारीजी (उदयपुर) के संसारपक्षीय डागा परिवार द्वारा उनका जीवनवृत्त पूज्यवर को उपहृत किया गया। स्व. साध्वी जतनकुमारीजी 'कनिष्ठा' की सहवर्तिनी साध्वी अमितप्रभाजी आदि साध्वियों ने छह वर्षों बाद गुरुदर्शन कर अपनी आन्तरिक प्रसन्नता को गीत के द्वारा अभिव्यक्त किया। साध्वी कुन्दनप्रभाजी ने अपनी चतुर्मास स्थली देवगढ़ में सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान कर पूज्यवर का श्रद्धासिक्त स्वागत किया।

देवगढ़ नगर पालिकाध्यक्ष श्री शोभालाल रेगर ने भावपूर्ण स्वरों में पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए कहा--'आपके

पदार्पण से देवगढ़ की धरती धन्य बन गई। हम अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं कि हमें आपके पदार्पण और आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हमारा नगर आपके उपदेशों को आत्मसात् कर आदर्श नगर के रूप में उभरेगा।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--'देवगढ़ में आज परमपूज्य आचार्यवर के रूप में महान् देव का समागमन हुआ है। आप लोग आचार्यप्रवर की द्रव्य पूजा नहीं, भाव पूजा करें। पूज्यप्रवर के जीवन की विशेषताओं और उपदेश को आत्मसात् कर अपने जीवन स्तर को उन्नत बनाएं तो वह आचार्यप्रवर का सच्चा स्वागत होगा।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--छल-कपट जिन्दगी की गन्दगी होती है। ऋजुता उसका विरोधी तत्त्व है। जब तक ऋजुता नहीं आती, प्रामाणिकता सुस्थिर नहीं बन सकती। बेईमानी, धोखाधड़ी आदि ऋजुता के अभाव में होते हैं। गृहस्थ जीवन में आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वित्त (धन) की आवश्यकता होती है, किन्तु उसके साथ वृत्त (चरित्र) भी रहना चाहिए। ऋजुता चरित्र को उज्ज्वल बनाती है। ऋजुता और सत्य का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। सरलता के अभाव में सत्य का देवता प्रसन्न नहीं हो सकता। जो नैतिक मूल्यों को छोड़ देता है, वह पतन के गर्त में चला जाता है। व्यक्ति अधमता को छोड़कर नैतिक मूल्यों को आत्मसात् करते हुए अपने जीवन को उत्तम बनाने का प्रयास करे।

आचार्यवर ने आगे कहा--'हमने इस वर्ष साध्वी कुन्दनप्रभाजी का चतुर्मास देवगढ़ निर्णीत किया था। कराना तो साध्वी कानकुमारीजी (सर.) का था, किन्तु उनका स्वर्गवास हो गया। बाद में हमने साध्वी कुन्दनप्रभाजी को अग्रणी बनाकर उनके छूटे हुए कार्य को पूरा करने भेज दिया। सभी साध्वियां स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए खूब अच्छा कार्य करती रहें। साध्वी अमितप्रभाजी आदि साध्वियां बहुत वर्षों बाद आई हैं। पहले ये साध्वी जतनकुमारी (सर.) के साथ थी। साध्वी जतनकुमारीजी एक तत्त्वज्ञा साध्वी थी। वे मातुश्री वदनांजी की सेवा में अठारह वर्षों तक रही। उन्होंने सुदूर प्रान्तों की यात्रा की, किन्तु बाद में अस्वास्थ्य के कारण गुरुदर्शन भी कठिन हो गया। उन्हें साध्वियों का अच्छा योग मिला। हमारी साध्वियां किस प्रकार सेवा करती हैं। उनके स्वर्गवास के बाद उनकी सहवर्ती साध्वी अमितप्रभाजी आदि साध्वियां इस वर्ष आचार्य तुलसी समाधि स्थल पर चतुर्मास कर आई हैं। सभी साध्वियां खूब अच्छा कार्य करें। साध्वी कंचनकुमारीजी देवगढ़ और उदयपुर से सम्बद्ध थी। उन्होंने अन्तिम समय में अनशन स्वीकार किया और वह लम्बा चला। ऐसी साध्वियों के जीवनवृत्त को पढ़कर अध्यात्म की सुन्दर प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है।'

आज सायंकाल बेल्जियम के डेनियल और क्रिस्टीन नामक दम्पति ने आचार्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

ग्रामोद्योग विकास मंडल का अवलोकन

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर सायंकालीन आहार के उपरान्त ग्रामोद्योग विकास मंडल में पधारे। आचार्यवर से मंगलपाठ सुनकर संस्थान के निकट आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में उग्रसिंह मेहता मेमोरियल ट्रस्ट के तत्त्वाधान में निःशुल्क होमियोपैथिक चिकित्सालय का प्रारंभ किया गया। ग्रामोद्योग विकास मंडल परिसर में अध्यक्ष श्री जीतमल कच्छारा, मंत्री श्री सुरेन्द्र मेहता आदि कार्यकर्ताओं ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया और संस्था द्वारा संचालित खादी वस्त्र निर्माण, अलमारी, सन्दूक आदि के निर्माण, विद्यालय संचालन इत्यादि गतिविधियों की अवगति दी। पूज्यवर से मंगलपाठ का श्रवण कर नवनिर्मित उग्रसिंह मेहता सभागार का लोकार्पण किया गया।

सभागार में समायोजित कार्यक्रम में परम पावन आचार्यवर ने कहा--'यहां ग्रामोद्योग और शिक्षा से सम्बद्ध गतिविधियां चल रही हैं। शिक्षा के साथ संस्कारों की बात भी अपेक्षित होती है। यहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों को संस्कारों का भी पोषण प्राप्त होता रहे। ग्रामोद्योग से कितने लोगों को रोजगार मिल जाता होगा। गांधीवादी विचारधारा से जुड़ा हुआ यह संस्थान खूब आध्यात्मिक और नैतिक विकास करता रहे और यहां के कार्यकर्ता पवित्र कार्य करते रहें।' कार्यक्रम के पश्चात् आचार्यवर ने संस्थान द्वारा संचालित बाल मन्दिर माध्यमिक विद्यालय का भी अवलोकन किया।

शताधिक गृहस्पर्श और प्रशिक्षुओं को प्रेरणा

३१ दिसम्बर। सन् २०११ वर्षान्त और देवगढ़ प्रवास का द्वितीय दिन। परमपूज्य आचार्यवर प्रातः श्रद्धालुओं के घरो में चरणस्पर्श करने हेतु नगर में पधारे। पूज्यवर जिस किसी मोहल्ले में भी पधार रहे थे, वहां रहने वाले अन्य जैन और जैनेतर समाज के लोग भी आचार्यवर का अपने घर में पधारने के लिए साग्रह प्रार्थना कर रहे थे। करुणा निधान आचार्यप्रवर ने प्रायः सभी प्रार्थियों को तृप्त किया। इस प्रकार सौ से अधिक घरों का स्पर्श करने पर भी करीब आधे ही तेरापंथी परिवार लाभान्वित हो पाए।

करीब साढे नौ बजे पूज्यप्रवर पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार राष्ट्रीय स्वयं सेवक द्वारा संचालित प्राथमिक शिक्षा वर्ग के सप्तदिवसीय प्रशिक्षण स्थल पर पधारे। यहां सर्वाधिकारी श्री नारायणलाल उपाध्याय, सह विभाग संघचालक श्री किशन शक्तावत आदि कार्यकर्ताओं ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत करते हुए प्रशिक्षण प्रक्रिया की अवगति दी। कार्यकर्ताओं ने बैण्डवादन कर आचार्यवर का अभिनंदन किया।

राजसमन्द जिले के ४८ गांवों से समागत ३८० प्रशिक्षुओं को सम्बोधित करते हुए परम पावन आचार्यवर ने कहा--'व्यक्ति के जीवन में बुभूषा (कुछ अच्छा होने की इच्छा), जिज्ञासा (कुछ अच्छा जानने की इच्छा) और चिकीर्षा (कुछ अच्छा करने की इच्छा) होनी चाहिए। यदि इन तीनों का प्रशिक्षण मिल जाता है तो व्यक्ति प्रगति कर सकता है। शाखा और बौद्धिक जैसे उपक्रम संस्कार भरने और प्रशिक्षण देने में सहायक बन सकते हैं। व्यक्ति में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा और प्राणी मात्र के प्रति मैत्री और अनुकम्पा की भावना रहती है तो भीतर की शक्ति जाग जाती है। सभी प्रशिक्षु अपने पवित्र कार्यों के द्वारा राष्ट्र की पवित्र सेवा करते रहें।' पूज्यप्रवर ने प्रशिक्षुओं को नशामुक्त रहने का संकल्प भी कराया। प्रवास स्थल पधारने से पूर्व आचार्यप्रवर का सामुदाायिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्रस्तावित पारस नगर स्थल और श्री महावीर ब्रह्मचर्य आश्रम में भी पदार्पण हुआ।

सदुपयोग करें समय का

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व स्थानीय तेरापंथ कन्यामण्डल द्वारा गीत प्रस्तुति के उपरान्त अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश मेहता, डॉ. जतन डागा, श्री देवीलाल हिरण और सुश्री श्रद्धा सुराणा ने अपने भावों को अभिव्यक्त किया। श्री भरत त्रिपाठी ने आचार्यवर की अभ्यर्थना में सुन्दर काव्यपाठ किया।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में विशाल जनमेदिनी को दुःखों की परम्परा से मुक्त बनने के लिए पापकारी प्रवृत्ति से बचने और साधना के अभ्यास की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने वर्षान्त दिवस पर जनता को संबोध प्रदान करते हुए कहा--'सन् २०११ विदाई ले रहा है और सन् २०१२ के स्वागत की तैयारी की जा रही है। काल का नियम है-बीतना। समय तो अपनी गति से चलता रहता है। व्यक्ति समय का सदुपयोग कर अपने जीवन को धन्य बनाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सायंकालीन आहार के पश्चात् आचार्यवर ने कुछ अवशिष्ट श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श किया। अर्हत् वंदना के पश्चात् आचार्यप्रवर ने देवगढ़ के श्रद्धालु परिवारों को उपासना का अवसर प्रदान किया। श्रद्धालुओं ने पूज्यप्रवर से विविध संकल्प स्वीकार किए। भ्रातृद्वय श्री सुरेन्द्र मेहता और श्री प्रकाश मेहता ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। रात्रि में भक्ति संगीत संध्या का उपक्रम रहा। नए वर्ष के शुभारंभ तक चले इस कार्यक्रम में श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल सेठिया ने अपनी प्रस्तुतियां दीं।

नववर्ष पर बृहत् मंगलपाठ एवं पावन पाथेय

१ जनवरी। नववर्ष सन् २०१२ का पावन प्रभात। देश के विभिन्न प्रान्तों से सैकड़ों श्रद्धालु पूर्व संध्या पर ही देवगढ़ पहुंच गए। मेवाड़ के अनेक क्षेत्रों से हजारों लोग भी इस पावन अवसर पर पूज्य सन्निधि में पहुचकर आह्लादित थे। चारों ओर उत्साह और उल्लास का वातावरण था।

परम श्रद्धास्पद आचार्यवर ने उपस्थित विशाल जनमेदिनी को पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा--'काल अपनी गति से गतिमान रहता है। जो कभी भविष्य होता है, वह कभी वर्तमान बन जाता है और फिर अतीत में समाविष्ट हो जाता है। हम जब २०१० में जी रहे थे, तब २०११ भविष्य था, फिर वर्तमान बन गया और अभी कुछ घण्टों पूर्व वह इतिहास की धरोहर बन गया। २०१२ कुछ घण्टों पूर्व भविष्य था, अब वह वर्तमान हो गया।

१ जनवरी का दिवस और नए वर्ष का प्रारंभ। कुछ लोगों के मन में नए वर्ष के प्रति उल्लास का भाव होता है। वे यह भी चिन्तन करें कि एक वर्ष बीत गया तो जीवनकाल का भी एक वर्ष कम हो गया। इसलिए आत्मोत्थान के प्रति और अधिक जागरूक बनना चाहिए। दुनिया में भौतिक और आर्थिक विकास भी अपेक्षित होता है। किन्तु आत्मोत्थान के लिए आध्यात्मिक और नैतिक विकास की ओर भी ध्यान दें।

नए वर्ष के अवसर पर कोई एक शुभ संकल्प स्वीकार करें। इस वर्ष में यथासंभव झूठ बोलने से बचने का प्रयास करें। गृहस्थ को कदाचित् विवशतावश झूठ बोलना पड़ता है। किन्तु जहां तक हो सके, उससे बचने का प्रयत्न करें। सत्य की साधना करते हुए थोड़ी कठिनाइयां भी आ सकती हैं, कुछ व्यवसायिक नुकसान भी झेलना पड़ सकता है। किन्तु उन्हें झेलने का मनोबल और माद्दा रहना चाहिए। परेशानियां किसके जीवन में नहीं आती उनसे डरें नहीं, उन्हें समभावपूर्वक झेलने का प्रयास करें। यह आपके लिए श्रेयस्कर होगा। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से लोगों ने एक वर्ष तक झूठ से यथासंभव

बचने का संकल्प स्वीकार किया।

पावन पाथेय के उपरान्त आचार्यप्रवर ने जनता को आर्षमंत्र और बृहत् मंगलपाठ सुनाया। नववर्ष के शुभ अवसर पर पूज्यवर के मुखारविन्द से पाथेय और मंगलपाठ का श्रवण कर प्रत्येक श्रद्धालु हर्षविभोर था। देवगढ़ के कुछ श्रद्धालुओं के सहयोग से इस पुनीत प्रसंग का संस्कार चैनल पर सीधा प्रसारण किया गया। देश के विभिन्न प्रान्तों और विदेश में अवस्थित लाखों श्रद्धालु उसी क्षण मंगलपाठ सुनकर प्रफुल्लित हो गए।

कार्यक्रम में मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी ने गीत का संगान किया। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रेक्षा इन्टरनेशनल द्वारा प्रकाशित आचार्यप्रवर के सुन्दर चित्रों से युक्त नयनाभिराम केलेण्डर को अमृत महोत्सव संयोजक श्री ख्यालीलाल तातेड़ और श्री बाबूलाल कच्छारा ने पूज्यप्रवर को उपहृत किया। श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल सेठिया एवं तेयुप आमेट के अध्यक्ष श्री प्रवीण ओस्तवाल ने युवादृष्टि का जनवरी अंक आचार्यवर को भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

'रोज की एक सलाह' का लोकार्पण और ३० मिनिट में प्रथम संस्करण परिसंपन्न

नववर्ष के सुअवसर पर आचार्यप्रवर की नवीन कृति 'रोज की एक सलाह' का लोकार्पण किया गया। इस पुस्तक में आचार्यवर के ३६६ प्रेरक वचन निबद्ध हैं। कृति के संदर्भ में मुनि कुमारश्रमणजी ने विचार व्यक्त किए और आचार्यवर के निर्देश पर १ जनवरी की सलाह भी पढ़कर जनता को सुनाई। मुनि विश्रुतकुमारजी ने कृति को पूज्यप्रवर के करकमलों में समर्पित किया।

आचार्यप्रवर ने पुस्तक के संदर्भ में कहा--'रोज की एक सलाह' की सलाह पाठकों के लिए ही नहीं, मेरे लिए भी काम की हैं। इस पुस्तक से लोगों का पथ आलोकित होगा तो हमारा श्रम सार्थक हो सकेगा।'

पूज्यप्रवर की इस नवीनतम कृति के प्रति जनता में काफी उत्सुकता देखने को मिली। मात्र ३० मिनिट में ही प्रथम संस्करण की संपन्नता पुस्तक की लोकप्रियता का साक्ष्य है।

नववर्ष का प्रथम दिन दौलपुरा में

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने बृहत मंगलपाठ के पश्चात् दौलपुरा की ओर विहार किया। देवगढ़ के श्रद्धालुओं के अवशिष्ट घरों का स्पर्श करने हेतु पूज्यप्रवर नगर में पधारे। तेरापंथ समाज के सिवाय अन्य जैन और जैनेतर समाज के लोगों की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर उनके घरों में भी पधारे। इस प्रकार देवगढ़ के सौ से अधिक घरों का स्पर्श कर ५.६ कि.मी. का विहार करते हुए पूज्यप्रवर दौलपुरा में पधारे।

नववर्ष पर शान्तिदूत आचार्यप्रवर का एकदिवसीय प्रवास पाकर दौलपुरा की जनता प्रसन्नता से सराबोर थी विशाल स्वागत जुलूस के मध्य आचार्यप्रवर का स्थानीय पंचायत भवन में पदार्पण हुआ। सरपंच श्रीमती रेखादेवी माली के साथ गांव के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने पूज्यचरण का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर का प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ। प्रवास स्थल पर पहुंचने के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने आचार्यवर को वंदना की और पूज्यप्रवर से नववर्ष पर मंगलपाठ का श्रवण किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, कन्यामंडल, श्री मीठालाल सुकलेचा, श्री पवन शर्मा आदि ने पूज्यप्रवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद और समणीवृंद ने नववर्ष के प्रंसग पर एक गीत का संगान किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा--'आज दौलपुरा की धरा पर दो-दो सूर्य उदित हुए हैं। एक नए वर्ष का सूर्य और दूसरा आचार्य श्री महाश्रमण रूपी सूर्य। पूज्यप्रवर के तेज के सामने आज आसमान का सूर्य भी निस्तेज नजर आ रहा है। क्योंकि आचार्यवर के पास कभी धूमिल नहीं होने वाला अध्यात्म और नैतिकता का तेज है। नववर्ष पर गत वर्ष की कड़वाहट को धोकर अपने मन को पूरी तरह खाली कर लें और उस खाली मन में आचार्यप्रवर के पावन संदेश को उतारने का प्रयास करें।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में जनता को ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप की आराधना के द्वारा वर्ष को सुफल बनाने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वीवृंद और समणीवृंद द्वारा प्रस्तुत गीत का उल्लेख करते हुए पूज्यप्रवर ने उन्हें इस वर्ष में एक आगम के स्वाध्याय का संकल्प कराया और एक-एक दीक्षार्थी तैयार करने की प्रेरणा भी दी।

आज दिनभर नवसंवत्सर पर गुरुदर्शन करने हेतु श्रद्धालुओं के आवागमन का तांता लगा रहा। दौलपुरा स्थित तेरापंथ समाज के तेरह घर सायंकाल पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने। रात्रि में श्रद्धालुओं को आचार्यवर की उपासना का अवसर संप्राप्त हुआ।

चट्टानों पर चलकर जाना इतिहास

परमाराध्य आचार्यवर प्रातः दौलपुरा से मदारिया की ओर प्रस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने कुछ क्षण रुककर मार्गवर्ती आंजना गांव के बाहर की ओर स्थित घाणी पर आंखों पर पट्टी बांधे बैल द्वारा तेल निकालने की प्रक्रिया का अवलोकन किया। लोगों के निवेदन पर आचार्यवर यहां के अंजनेश्वर महादेव नामक मन्दिर में पधारे। गुफा में बने हुए इस मन्दिर के विषय में बताया गया कि पारेश्वरनाथ नामक यह मन्दिर कालान्तर में अंजनेश्वर महादेव के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हो गया। ऐसी किंवदन्ती है कि हनुमानजी की मां अंजना ने यहां पर साधना की थी। आचार्यप्रवर मूल मन्दिर की गुफा का अवलोकन कर मन्दिर के दाहिनी ओर स्थित गुफाओं के अवलोकनार्थ पधारे। ७८ सीढ़ियों से नीचे उतर कर पूज्यचरण ने पहाड़ी भूभाग का स्पर्श किया। ऋषि मुनियों की इस तपस्थली की ऊबड़-खाबड़ विशाल चट्टानों पर चलकर महर्षि आचार्यवर ने इस स्थान की ऐतिहासिकता के विषय में अवगति प्राप्त की।

एक गुफा के निकट लोगों ने जानकारी देते हुए बताया कि इस गुफा में महासती अंजना साधना करती थी और गुफा के निकट खड़ी दो विशाल चट्टानें उस समय द्वार के रूप में प्रयुक्त हुआ करती थी। पहाड़ पर स्थापित एक विशाल त्रिशूल की ओर संकेत करते हुए बताया गया कि इसे ऋषि-मुनियों ने दुष्टात्माओं से रक्षार्थ स्थापित किया था। आचार्यवर ने यहां के प्राकृतिक जल कुण्ड का भी अवलोकन किया। इस प्रकार पूज्यवर ने ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी भूभाग पर चलकर और दुरूह सीढ़ियों पर चढ़कर-उतरकर ऐतिहासिक स्थल का अवलोकन किया।

आचार्यवर जब इस मन्दिर के प्रवेश द्वार की सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे, तब सहवर्ती सन्तों ने हाथ आगे बढ़ाकर सहारा लेने का अनुरोध किया। पूज्यवर ने प्रसन्नता के साथ फरमाया--'आज कोई सहारा नहीं। बिना सहारे ही हम इन सीढ़ियों पर चढ़ सकते हैं।' यह फरमाते हुए आचार्यप्रवर त्वरा के साथ ऊंची-ऊंची दुरूह ३६ सीढ़ियों पर चढ़ गए। आचार्यप्रवर के इस आत्मबल को देखकर उपस्थित मुनिवृंद और श्रद्धालु भावविभोर थे।

आंजना गांव के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में समायोजित कार्यक्रम में श्री सम्पतलाल देसरला, श्री भंवरलाल देसरला और प्राचार्य श्री नूतनप्रकाश जोशी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में विचार अभिव्यक्त किए। आचार्यवर ने उपस्थित जनता को पावन संबोध प्रदान किया और कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प कराया। कार्यक्रम के उपरान्त विहार मार्ग के करीब १ कि.मी. भीतर स्थित आंजना गांव के पांचों तेरापंथी घर पूज्यवर की पुनीत चरणरज से पावन बने।

अंकुश रखें जीवन में

आचार्यप्रवर आंजना गांव से प्रस्थान कर मार्गवर्ती हीरा खेड़ा के लोगों को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए मदारिया पधारे। आचार्यप्रवर का पदार्पण गांववासियों के लिए मानों सभी त्यौहारों का संगम था। सर्वत्र आस्था का सैलाब-सा उमड़ रहा था। स्वागत जुलूस के मध्य पूज्यप्रवर का स्थानीय तेरापंथ भवन में पदार्पण हुआ। आचार्यवर ने यहां कुछ क्षण विराजमान होकर 'प्रभो! यह तेरापंथ महान्...' गीत का संगान किया। कुल ९.७ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर दक परिवार के निवास पर पधारे। अपने आराध्य को अपने प्राङ्गण में देखकर दक परिवार अत्यन्त प्रफुल्लित और प्रमुदित था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, श्री शेषमलजी दक, प्रदीप कोठारी और जितेन्द्र चौपड़ा ने पूज्यवर के चरणों में अपने भाव-सुमन अर्पित किए। विधायक श्री हरिसिंहजी ने अपने भावपूर्ण विचारों को अभिव्यक्त किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरणास्पद अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने पावन प्रवचन में जनता को जीवन में सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन के विकास का संबोध देते हुए राग पर त्याग का, भोग पर योग का और मनोरंजन पर आत्मरंजन का अंकुश रखने की प्रेरणा प्रदान की। मदारिया में तेरापंथ समाज के २७ परिवारों सहित ३७ जैन परिवार हैं। सायंकाल उनके घरों में पूज्यवर का पदार्पण हुआ। रात्रि में सभी श्रद्धालुओं को आचार्यवर की समुपासना का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लोगों ने विविध संकल्पों द्वारा आचार्यवर को त्यागमयी भेंट अर्पित की।

घरों में चरणस्पर्श के दौरान एक घर द्वार के आसपास फैली हुई चींटियों के कारण पूज्यचरण का स्पर्श पाने से वंचित रह गया और समयाभाव के कारण कुछ घरों में आचार्यप्रवर बाहर से ही चरण स्पर्श कर पधार गए। पूज्यवर के पदार्पण से वंचित रहे श्रावकों का मन कुछ मायूस हो गया। उन्होंने आचार्यवर से पुनः पधारने की प्रार्थना की। आचार्यवर उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर दूसरे दिन विहार से पूर्व विहार पथ से विपरीत दिशा में स्थित उनके घरों में पधारे और उनकी भावना को तृप्त किया। मायूस श्रावक आचार्यवर का अनुग्रह पाकर हर्षाभिभूत थे।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

एल.डी.इंस्टीट्यूट में किया डॉ. कलाम ने आचार्य महाप्रज्ञ का स्मरण

दिनांक ११ नवम्बर २०११ को भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अहमदाबाद के प्रतिष्ठित दलपतभाई भारतीय संस्कृत विद्या मन्दिर में इलेक्ट्रोनिक लाइब्रेरी के उद्घाटन के अवसर पर अपने अभिभाषण में परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का पावन स्मरण करते हुए अपनी पहली मुलाकात का वर्णन किया। डॉ. कलाम के वे उद्गार आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति उनकी आन्तरिक श्रद्धा को अभिव्यक्त करते हैं। उनके संपूर्ण वक्तव्य का गुजराती अनुवाद 'प्रबुद्ध जीवन' नामक प्रतिष्ठित गुजराती पत्रिका में प्रकाशित हुआ। वक्तव्य का अनूदित अंश यहां उद्धृत है

'मैं जब भी आचार्य महाप्रज्ञजी से मिला। तब मुझे ऐसे महान संत के दर्शन हुए, जिन्होंने आठ दशक तपस्या की हो। उग्र तपस्या से उन्होंने अपने आवेग, क्रोध, राग और द्वेष को नष्ट किया। अपने देश की ऐसी महान आत्माओं के उपदेश से शांति अवश्य होगी और निश्चित रूप से आध्यात्मिक समृद्धि का प्रचार-प्रसार होगा। वे तो दीपक के प्रकाश की तरह थे, जिन्होंने छोटी आत्माओं को प्रबुद्ध आत्मा बनने के लिए आकर्षित किया।

उनके तप के तीन लक्षण हैं--चलते रहो, ग्रहण करते रहो और देते रहो। वे दृढ़ संकल्प और एकाग्रता से चलते रहे। उनसे मिलने आने वाले लोगों और प्रकृति से वे ज्ञान ग्रहण करते रहे। अपने लेखन, कार्य और व्यवहार से वे समाज में आशा के दीप जलाते रहे। उनके संपर्क में आने वाले प्रत्येक आत्मा की शुद्धि करने वाले वे उच्च कोटि के ज्ञान प्रवाह रूप थे। मैं उनसे मध्यरात्रि में महरोली के 'अध्यात्म साधना केन्द्र' में मिला और मुझे भी ऐसी ही अनुभूति हुई।

राष्ट्र और लोककल्याण के लिए वे अपने मुनियों के साथ तीन बार प्रार्थना करते थे। मुझे अब भी याद है, प्रार्थना के बाद उन्होंने मुझे दिव्य उपदेश दिया था। वह उपदेश आज भी मेरे मन में गूंज रहा है। उन्होंने कहा--कलाम! अपने साथियों के साथ रहकर आपने जो कार्य किया है, उसके लिए ईश्वर आपको आर्शीवाद दे। ऐसे सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आपके लिए 'ऊंचे मिशन' का निर्माण किया है। इसीलिए आज आप यहां मेरे सम्मुख हो। मैं जानता हूं अब अपना देश अणुशक्ति धारण करने वाला देश है। आपने और आपके साथियों ने जो कार्य किया, उससे बड़ा यह मिशन है, किसी भी व्यक्ति ने कभी किया हो उससे भी महान आपका यह मिशन है। दुनिया में हजारों अणुशास्त्रों का प्रसार हो रहा है। मैं सभी दिव्य आशीर्वादों के साथ आपको और केवल आपको ही आग्रह कर रहा हूं कि इन अणुशस्त्रों को असर को बेअसर, निरर्थक और राजकीय दृष्टि से अनुपयोगी बनाओगे। यह मेरा आपसे और आपके साथियों से अनुरोध है।'

जब आचार्यश्री ने अपनी इस महान सीख को पूरा किया, तब नीरव शांति प्रसरने लगी। मुझे ऐसा लगा कि कहीं यह स्वर्ग से हुई दिव्य वाणी तो नहीं है! मेरे अड़सठ साल की उम्र में इस अनुरोध ने मुझे पहली बार झकझोर दिया। (अब मैं अस्सी साल का हूं) मेरे लिए यह एक चुनौती के समान है और मेरे जीवन का यह मंत्र बन गया है।'

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- स्व. श्री तोलारामजी बोथरा (श्रीडूंगरगढ़) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू दीपचन्द-सुखराजदेवी, बिजयसिंह-कमलादेवी, सुपौत्र व पौत्रवधू मेघराज-जयश्री, अरुणकुमार-वीणा, विकासकुमार-सुनीता, तरुणकुमार-सरोज, प्रपौत्र श्रेयांस, पुलकित, प्रणव, संयम, रजत, ईशान एवं प्रपौत्री उज्जवला, भूमिका बोथरा द्वारा प्रदत्त।

३१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व.श्री कानमलजी सेठिया (छोटीखाटू-कानपुर) की प्रथम पुण्य तिथि (१३ जनवरी) पर श्रद्धानत भावांजलि सुपुत्र व पुत्रवधू टीकमचन्द-बिमला सुपौत्र व पौत्रवधू अजय-रेणु, अमित-तनु, प्रपौत्र प्रखर प्रपौत्री कृति, आयुषी व समस्त सेठिया परिवार कानपुर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.श्री हुकमीचन्दजी लालचन्दजी कावड़िया (सायरा) की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रोशनदेवी सुपुत्र व पुत्रवधू कैलाश-दमयन्ती, हीतेश सुपौत्र संयम कावड़िया द्वारा प्रदत्त।

संपर्क के लिए हमारा पता है–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आमेट

पो. चारभुजारोड-३१३ ३३२, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : ७-१-२०१२

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**